28-3-67 ओम् शान्ति रात्रीक्लास

सेन्टर चलाना है वहुत सहज। मुरली तो जीती ही है। सभी का आधार है मुरली पर। सीढ़ी पर समझाना चक्र पर समझाना। ऐसे ही भी समझा सकते है। शिव जयन्ति भारत में मनाई जाती है। भगवान ही आकर नई दुनियां स्वर्ग रचते है। स्वर्ग के यह मालिक थे। अभी वो कहां गये। 84जन्म तो लेने ही पड़े। अब भगवान फिर से आये है राजयोग सिखा रहे है। वो निराकार वाप ऊंच ते ऊंच है। ज्ञान का सागर भी है। वो ही बैठ पढ़ाते है। समझो कि मुरली कबनही मिलती है तो ऐसे भी तो बैठ समझा सकते है। दो रोटी खाना और ईश्वरिय सर्विस करना। ईश्वर से वहुत ऐवजा मिल सकता है। आसुरी गुण है तो फिर इतनी सर्विस कर नही सकेंगे। यह अविनाशी ज्ञान रत्न देखने में नही आते है। बुधी से समझने की चीज है। वेद शास्त्र आद पढ़ते है वो है सब भक्ति मार्ग। ज्ञान को रत्न कहा जाता है। भक्ति को रत्न नही कहा जाता। 84जन्मों का राज समझाने से भी कल्प 5000वर्ष का सिध हो जाता है। प्रदर्शनी में भी कितने आते है। दिन प्रति दिन सहज करते जाते है। गीता का भगवान कृष्ण देवता वा शिव परमात्मा? ऐसे प्रश्न कोई पूछ नही सकते है। गीता तो सारी दुनिया भर में मशहूर है कि कृष्ण भगवानोवाच की गाई हुई है। यह कहते है शिव भगवानोवाच। यह सिध करते है कि वो पूरे 84जन्म लेते है और वो पुनर्जन्मरहित है। जब करेंगे तो समझेंगे कि गीता झूठी होने कारण ही सब शास्त्र भी झूठ हो गये है। लड़ाई आद भी महाभारत वाली सब सिध हो जाती है। ओम

29-3-67: रात्रीक्लासः- यह दुनियां विलकुल ही डर्टी है। वाप की श्रीमत मिलती है कि अपने को आत्मा
*** ************ * *
समझो तो खुशी का पारा चढ़ जावेगा। माया है वड़ी कड़ी। समझते हुये भी कि वाप स्वर्ग का मालिक वना रहे है तो भी नही मानते है। माया नाक पकड़ कर उल्टा कर देती है। सीधे होते नही। एक दो के मालिक वन जाते है उनका भी नही मानते है। ऐसे एक दो नही है। वहुत होते रहते है। वावा तो अनुभवी है नां। वावा के पास समाचार वहुत वण्डरफुल आते है। माया ओपन-कोई को भी नाक से नही पकड़े नही तो फिर तो ईश्वर की भी नही चलती है। माया के साथ युध है। वो भी कम नही है। अच्छों-2 को भी गिरा देती है। वहुत अच्छों-2 को भी समझ में नही आता है कि यह श्रीमत है। गुप्त है नां। तो यह शरीर देख कर शिव वावा को भूल जाते है। वावा हमेशा कहते है वस ऐसे ही समझो कि सब शिव वावा ही कह रहे है। यह राय शिव वावा देते है। फिर भी अगर नही चलते है तो गोया कि नास्तिक है। वाप कहते है मै इनमे हूं मेरी ही सुनो। इसमे वड़ी समझ चाहिये। वहुत भारी मंजिल है। ठिक्कर बुधी को इतनी ऊंची वाप आकर बुधी वनाते है। नां समझने कारण अपनी ही अक्ल ऊंच समझ लेते है। शिव वावा कहते है हमको शरीर तो चाहिये नां। नही तो तुमको कैसे पढ़ाऊं? तो समझा कर तमोप्रधान से सतोप्रधान वनने का पूरा पुरुषार्थ करना चाहिये। ऐम आब्जेक्ट का सा० एक सैकिंड में कराते है। अपने को लायक वना कर फिर दूसरों को भी वनाना है। वावा वार-वार कहते है कि देही-अभिमानी वनो। इसमे ही वहुत-2 मेहनत है। इसलिये रोजाना पोतामेल रखेंगे तो घाटा देख कर फिर तीव्र पुरुषार्थ करने का वेग आवेगा। कृपा की वात नही है। इसमे तो अपनी ही मेहनत है। कहते है वावा को कि वावा हम आपको ठुकरायेंगे नही भूलेंगे। नही परन्तु वहुत है जो रूठ जाते है। पत्र नही लिखेंगे वो फिर गुस्से मे आकर डिससर्विस करेंगे। फिर वावा तो यही कहेंगे नां कि ड्रामा अनुसार इसकी तकदीर में ही नही था। समझ रखनी है कि मुझे वाप का वन कर मनसा वाचा कर्मणा सर्विस करनी है। कितने मजे की नालेज है। दुनियां भर में कोई स्वदर्शन चक्र धारी हो नही सकते है। उन्होंने तो कृष्ण को विष्णु को चक्र दे दिया है। देना तो चाहिये ब्राह्मणों को। परन्तु शोभे नही। इसलिये फाइनल जो देवतायें है उनको ही देते है। तुम्हारी बुधी में फिरता रहता है। गुप्त मेहनत वहुत करनी है। बुधी में आता नही है तो याद फिरती नही रहती है। श्रीमत को नामंजूर कर देते तो श्रेष्ट वनना भी नामंजूर हो जाता है। ओम?